सवेरे क्लास ओम शान्ती 22-1-67

बाप दादा की नूरे रत्नों के साथ चिट चैटः-

नूरे रत्न दीदी प्रितः-याद प्यार बादसमाचार कि पत्र पाया है बाबा। जयपुर लिये मोहनी और गोपाल बहुत अच्छे हैं। मोहनी एक सर्विस का सच्चा हीरा है। अगर इतना नशा चढ़ा हुआ है तो। मोहनी को बाबा सभी सैन्टर्स की निगाह वानी रूहानी पर रखा है। ना के सिर्फ जिस्मनी, जो दीदी कर रही हैं। यह कदरदान और बहुत चमत्कारी और डबल पढ़ाई में अच्छी ही पास है। और कोई इतनी दोनों पढ़ाई जिस्मानी रूहानी में तीखी नही है। सर्विस का पूरा जोश नां चढ़ा है। अब चढ़ेगा जरूर। और कमाल कर दिखावेगी। जिस्मनी पढ़ी लिखी अच्छी है। स्त्रीयों की कमेटियों वा ऐसोशियेशन्स में जाये उनको जगा सकती है। जरूर समय लगता है। युक्ति से बाजू लाना है। फिर भी दुनिया तो आसुरी रावण सम्प्रदाय है। जैसे गांधी जी खुद कहता था और सभी इस समय भी अपने को रावण राज्य का समझते है। यह कलियुग है। कोई सतयुग तो समझते भी नही। और सतयुग ही ईश्वरीय दैवी राज्य है। वा राम राज्य है राम राज्य और किशु राज राज्य का भी इस कौरव प्रजा राज्य को पता नही है। परम पिता शिव बाबा ने तो कहा है नां कि यह आसुरी राज्य है। अब ईश्वरीय राज्य स्थापन कर रहा हूं। जिस बाद ही विनाश शुरू होना है। और 100% सरटेन है। गुलजार और मोहनी दिल्ली की प्रदर्शनी में मुख्य है। बहुत-2 अच्छा है। और बहुतों की मदद करनी है। बहुत अच्छा मौका है। दो चार स्टाल और रैड हो जावे तो बहुत अच्छा है। एक दो स्टाल खास चित्र मुख्य रख उन पर समझाओ। जो समझना चाहे उसके लिये बाबा दो चार स्टाल रैड करने लिखा है। अगर मिल जावेगा तो पीछे अच्छा है। अच्छा थोड़ी लिखत से बहुत समझना :-विदाई

22-1-67:-नूरे रत्न आत्मा प्रकाश, और महेन्द्र, दोनों प्रित बाप दादा कहै:-कि सस्तु मैडिलस जो अटकल चार पांच पैसे खा जाते है और ऊपर में कड़ी हो जो पिन में सीधा लटक जावे। अभी टेड़ा लटकता है। सो बहुत-2 बनाये दो। देहली में भी कोई को लगाने अच्छे आदमियों को, काम में आवेंगे। समझा कर बाद में देना है। दिल्ली में बहुत जरूरत है। बच्चे अभी तक स्वदेशी विशाल बुधी फराक दिल नां बने है। यह मैडिलस बहुत काम में आ सकते है। अगर समझाने वाले अनन्य आज्ञाकारी सर्विसयुक्त है तो। बड़ी भारी सौगात है जो विश्व का मालिक बनाती है। अब तक कोई बच्चे को इनकी वैल्यु का पता नही है। क्यों कि देह अभिमन बहुत अन्दाज में है। और नामी ग्रामी जो बड़े मैडिलस देते हैं वो तो वैथ कौड़ी थे। यह वैथ हीरे है। बनाने वाले भी अब तक इतना कदर नही रखते। बनाने वाले जो ज्ञान वाले है सो भी कदर नही रखते है। इतना नही समझते कि लाखों हीरे जैसे बन सकते है। इसलिये ढील करते है। फौरन बनाने लग जावें और देहली प्रदर्शनी जो दो मास चलनी है लाखों की जरूरत है। प्रदर्शनी के मुख्य सभी भी इतना कदर नहीं रखते है। यह पत्र प्रदर्शनी कमेटी को पढ कर सुनाना है जी। और बहुत अच्छा देहली वाले प्रदर्शनी की सर्विस में तन मन धन अर्पण करना है। बहुत छोटे है।-दो चार 4 औररैड दे सकते है। स्टाल तो बहुत अच्छे है। एक्स्टा रैड्री खर्चा मधुबन सैन्टर देगा। खूब सर्विस हो सकती है। सिर्फ इन त्रिमूर्ती 5 पैसे वाले चित्रपर समझाओ तो यह पत्र सभी सैन्टर्स पर पढ़ कर सुनाना है। और तो और मुरली में छपवा देते है तो बच्चों को सर्विस अर्थ पूरी आखें खुले। अजन अधूरी खुली है। अपने ही देह अभिमान के नशें में रहते है। यह तो देहली में सर्विस करने का नम्बरवन चांस मिला है। खूब सजाओ और सर्विस करो। ग्वालियर वाले चित्र लाकर सजाओ। मिल सकें दो-चार स्टाल और रैड करो। जरा आसुरी गवर्मेन्ट की आखों को खोलें। अब तक बच्चों को नशा नही है ईश्वरिय सन्तान होने का। अच्छा जी विदाई

23-1-67 :- की प्रातः क्लास की पआईन्टः-बाप को और सृष्टी चक्र को याद करना है। गीता में शुरू में और फिर पिछाड़ी में है मनमनाभव। कुछ नां कुछ आटे में लून है मुख्य बात है यह मामेकम याद करो। इनको ही सामग्री कहा जाता है। भगवान है ज्ञान का सागर। मनुष्य है शास्त्रों के सागर। बाप शास्त्र तो नह नही सुनावेंगे नां। वो भी शास्त्र सुनावे तो बाकी भगवान और मनुष्य में फर्क ही क्या रहा? बाप कहते है इन भक्ति मार्ग के शास्त्रों का सार मैं तुमको समझाता हूं। मुरली बजाने वाले सांप को पकड़ते है तो उनके दांत निकाल [illegible]